© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

सिन्धु सभ्यता का विघटन : समीक्षा एवं अन्र्तदर्शन

आदर्श प्रताप सिंह
नेट, जे0आर0एफ0
एम0ए0–प्राचीन इतिहास
डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
फैजाबाद

सार– जाति प्रथा ने समूचे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रस्तुत लेख में जाति की उत्पत्ति कैसे हुई इसके बारें में विद्वानों के विचारों का समीक्षात्मक वर्णन किया गया है। भारत में जाति प्रथा समुचे विश्व के लिए एक नयी प्रवृत्ति थी और इसकी शुरुआत कैसे हुई इस पर विभिन्न विचार दिखायी देते हैं। जैसे प्रजातीय विभेद, ब्राह्मण उत्पत्ति का सिद्धान्त, धार्मिक उत्पत्ति का सिद्धान्त, प्रागैतिहासिक उत्पत्ति का सिद्धान्त तथा भौगोलिक उत्पत्ति का सिद्धान्त।

परिचय–

वर्ण व्यवस्था का आरम्भिक आधार कर्म था परन्तु कालान्तर में वर्ण कर्म के साथ कठोर होकर विभिन्न जातियों में परिणित हो गये तथा जाति का आधार विशुद्ध रुप से जन्म हो गया।

वैदिक ग्रन्थ में जाति शब्द का कोई उल्लेख नहीं मिलता। धर्मसूत्रों में ‘जाति’ शब्द का प्रयोग केवल मिश्रित वर्णों के लिए किया गया है तथा उन्हें शूद्र की संज्ञा दी जाती है, तथा यह इस बात का सूचक है कि ईसा पूर्व पांचवी शती तक समाज में जाति प्रथा प्रतिष्ठित हो गयी था। यूनानी लेखकों के विवरण तथा जातक साहित्य से पता चलता है कि सामान्यतः प्रत्येक जाति के लोग अपने पेशें का अनुसरण करते थे।

जाति शब्द जन से बना है जिसका अर्थ होता है जन्म लेना इस प्रकार जाति वर्ण से पृथक संस्था के रुप में सामने आती है। वर्ण सिर्फ चार होते हैं जबकि जातियां अनेक। जाति का परिवर्तन कठिन होता है जबकि वर्ण में बदलाव आसानी से सम्भव है।

जाति प्रथा की उत्पत्ति के लिए विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत दिये हैं। परम्परागत विचार इसे दैवी संस्था के रुप में इसे मान्यता देता है तथा परम पुरुष से उत्पन्न बताता है। इसका विवेचन वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के संदर्भ में किया जा चुका है परन्तु आधुनिक विद्वानों ने जाति के उत्पत्ति के अनेके सिद्धान्त बताये हैं।

प्रजातीय उत्पत्ति का सिद्धान्त–

प्रजाति से तात्पर्य मनुष्य के समूह से है जिनको जीव–विज्ञान के कुछ सामान्य शारीरिक लक्षणों के आधार पर दूसरे से अलग किया जाता है। रिजले महोदय का मत है कि इण्डो–आर्यन (भारोपीय) जब भारत में आये तो उन्होंने यहाँ के मूल निवासियों को पराजित कर उन पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। आर्यों ने अपने को श्रेष्ठ माना। पराजित जातियो के कन्याओं से विवहोपरान्त पंजाब क्षेत्र में अनेक जातियों ने जन्म लिया। परन्तु इस प्रकार के विवाहों से उत्पन्न जातियों को आर्यों ने स्वीकार नहीं किया जिसके कारण वे समाज से अलग रह गयी। प्रसिद्ध समाजशास्त्री धुर्ये ने भी इस मत का समर्थन किया और बताया कि आर्यों में जो अन्तर्विवाह की प्रथा प्रचलित थी उसका प्रचार यहाँ की पराजित जातियों में उन्होंने किया और कालान्तर में यह सम्पूर्ण भारत में फैल गयी।

समीक्षा– **किन्तु उपर्युक्त सिद्धान्त जाति प्रथा की उत्पत्ति की पूर्ण व्याख्या नहीं कर पाता है। प्रजातीय विभेदों ने केवल भारत की नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को अपने आगोश में लिया। दक्षिणी अमेरिकी, दक्षिणी आदि में भी प्रजातीय विभेद पाये जाते हैं परन्तु वहाँ पर जातियों का ये स्वरुप देखने को नहीं मिलता है। भारत पर आक्रमण करने वाली विदेश जातियों में भी प्रजातीय विभेद थे परन्तु वहाँ पर विभिन्न जातियों ने जन्म नहीं लिया। इस प्रकार सिर्फ प्रजातीय विभेद में जाति की उत्पत्ति का ढूढ़ना सर्वथा अनुचित है।**

ब्राह्मण उत्पत्ति का सिद्धान्त– **धुर्ये, इवेडसन, तथा डुवायसन जैसे विद्वानों ने कहा कि अपने को समाज में उच्चतम स्थान पर रखने के लिए ब्राह्मणों ने जाति प्रथा का निर्माण किया तथा बुद्धि द्वारा उन्होंने विभिन्न वर्गों के व्यवसाय सुनिश्चित किये तथा उन्हें शास्त्रीय मान्यता प्रदान किया। धार्मिक आधार देकर जाति को मानना सबके लिए अनिवार्य बना दिया गया। धुर्ये के अनुसार ''जाति व्यवस्था इण्डो–आर्यन'' संस्कृति के ब्राह्मणों का शिशु है जो गंगा–यमुना के मैदानों मं विकसित हुआ तथा यहाँ से देश के अन्य भागों में पहुँचाया गया। इस**

प्रकार ब्राह्मणों ने जाति प्रथा का निर्माण किया तथा अपने को सबसे ऊपर रखा एवं शुद्रों को निम्न स्थान दिया।

समीक्षा– **जाति प्रथा एक प्राचीन संस्था है इसे ब्राह्मणों की चाल करार देना उचित नहीं है।**

व्यावसायिक उत्पत्ति का सिद्धान्त– **इस सिद्धान्त का प्रतिपाद नेस फील्ड ने किया है उनके अनुसार इस प्रथा के लिए व्यवसायिक कारण ही उचित प्रतीत होते। एक व्यवसाय करने वाले समान वर्ण में गठित हो गये। व्यावसायिक उच्चता तथा निम्नता ही जाति की उच्चता एवं निम्नता का आधार बनी। इस तरह समाज में विभिन्न जातियों का गठन हुआ और ऊंच–नीच की कल्पना ने ही जातिवाद का जन्म दिया। जर्मन विद्वान दहलमन्न ने बताया कि प्रारम्भ में जो वर्ण थे वे व्यवसायिक आधार पर श्रेणियों में बदल गये। श्रेणियों बाद में कठोर होकर जाति बन गयी और कालान्तर में परम्पराओं ने एक दूसरों को अलग कर दिया।**

समीक्षा– **निःसन्देह व्यावसायिक आधार पर जातियों की उत्पत्ति बताना कुछ सीमा तक तर्कसंगत प्रतीत होता है क्योंकि प्राचीन भारतीय समाज में बहुत सी जातियां व्यवसायिक ही थी। परन्तु व्यवसाय को एकमात्र आधार मानना उचित नहीं है क्योंकि मिस्र, यूरोप आदि देशों में भी व्यावसायिक आधार पर ही विभिन्न वर्गों का जन्म हुआ है परन्तु वहाँ पर जतियों का ये स्वरुप नहीं दिखायी देता है। भारत में समान व्यवसाय करने वाले में भी ऊंच–नीच की भरवना समाहित मिलती है। अतः यह सिद्धान्त भी जाति प्रथा को पूर्ण विवेचित नहीं कर पाता है।**

धार्मिक उत्पत्ति का सिद्धान्त–

सेनार्ट, होकार्ट जैसे विद्वानों ने जाति प्रथा के पीछे एक मात्र प्रेरक तत्व धार्मिक क्रियाओं को माना है इस मत के अनुसार जाति प्रथा देवताओं को बलि चढ़ाने का मात्र संगठन है। प्राचीन हिन्दू समाज में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ायी जाती थी। पशुओं तथा मनुष्यों तक की बलि का विधान था इस कर्मकाण्ड के निमित्त विभिन्न वर्गों की आवश्यक पड़ती थी। ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ कहते थे अतः वह पशु बलि को कार्य नहीं करते थे अतः इस कार्य के लिए नीच कुल में जन्मा व्यक्ति ही बलि चढ़ाता था। कालान्तर में विभिन्न वर्गों में रुढ़ता आई और अनेक जातियां बन गयी।

समीक्षा– **जाति प्रथा का एक सामाजिक आधार है जिसमें धार्मिक कारण सहायक हो सकते हैं परन्तु सिर्फ धार्मिक कारण ही जाति का आधार था वह मत तर्क संगत प्रतीत होता है।**

प्रागैतिहासिक उत्पत्ति का सिद्धान्त–

इस मद के प्रतिपादक हट्टन के अनुसार आर्यों के आगमन के पूर्व भारत में कुछ ऐसी परम्पराएं विश्वास विद्यमान थे जिनसे जाति प्रथा का आधार मिला। इन प्रथाओं एवं विश्वासों के आधार पर वे विभिन्न समूहों में बंटी हुई थी। वे लोग 'माना' नायक शक्ति में विश्वास करते और मानते थे कि यह शक्ति सर्व शक्तिमान है और एक दूसरे से सम्बन्ध रखने पर यह शक्ति स्वतः रोक लगा देती थी। क्रमशः इस मत का विकास हुआ और जाति प्रथा ने जन्म लिया।

समीक्षा– **परन्तु ऐसा लगता है कि हटटन का मत एकांगी था ऐसे निषेघ एवं प्रथायें सम्पूर्ण विश्व में है परन्तु कहीं पर भी जातियों का यह स्वरुप नहीं दिखायी देता है।**

भौगोलिक उत्पत्ति का सिद्धान्त–

गिल्वर्ट जैसे विद्वान ने जाति प्रथा की उत्पत्ति के लिए भौगोलिक तत्वों को उत्तरदायी माना है। प्राचीन साहित्य से पता चलता है कि एक ही भौगोलिक परिवेश में रहने वाले लोग एक ही प्रकार का व्यवसाय करते है। कालान्तर में विभिन्न स्थानों के निवासियों को भिन्न–भिन्न जातियां बन गयी। दक्षिण के निवासी को दक्षिणात्य तो बंगाल के निवासी को गौड कहा गया।

निष्कर्ष– **जाति प्रथा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्त मतों को देखने के बाद हमें इस निष्कर्ष पर आते हैं कि जाति जैसी जटिल संस्था की उत्पत्ति के लिए किसी कारण विशेष को उत्तरदायी मानना उचित नहीं है। वस्तुतः जाति प्रथा कई कारणों के आपस में मिलने से ही हुई है। इस पर हट्टन महोदय ने कहा है कि भारत की जाति प्रथा की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं भौगोलिक तत्वों के पारस्परिक प्रभावों का स्वाभाविक परिणाम है जो अन्यतः कहीं नहीं देखने को मिलता है।**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

जी0एच0 धुर्ये	:	कास्ट क्लस एण्ड आकुपेशन
हटटन	:	कास इन इण्डिया
ओम प्रकाश	:	प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली।
कोसाम्बी दामोदर धर्मानन्द	:	प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता एसं ऐतिहासिक रुपरेखा
मजूमदार, रमेश चन्द्र	:	प्राचीन भारत में संघटित जीवन
मुखर्जी, राधाकुमद	:	हिन्दू सभ्यता
ठींजजंबींतल ैण्ब्	:	ैवउम ेचमबज व िप्दकपंद ैवबपमजल
बेंदकतं त्ण्च्ण्	:	प्दकव ।तलंद त्ंबमे
बेंदकतंए ठण्ब्	:	म्गचंदेपवद व िप्दकव.।तलंद ब्नसजनतम
त्पहअमकं	:	डंगउनससमत
।दबपमदज प्दकपं	:	त्वउपसं जेंचमत

श्रवनतदंस व िप्दकपंद
भ्पेजवतल